चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब केसरी	15-12-22	2	1-6

बदलते मौसम में सरसों की फसल में हो सकती है बीमारियां, सावधानियां बरतें किसान

हिसार, 14 दिसम्बर (ब्यूरो): दिसम्बर माह में मौसम में कई प्रकार के बदलाव देखने को मिल रहे हैं। खासतौर से इन दिनों में रात्रि को ठंड पड़ रही है जबकि दोपहर का तापमान में अभी खास गिरावट देखने को नहीं मिल रही है। इस कारण से बदलते मौसम में सरसों में कई प्रकार की बीमारियां हो सकती है।

तिलहन विभाग के पादप रोग विशेषज्ञ के अनुसार सरसों की फसल में कई बीमारियों का प्रकोप होने का खतरा रहता है, जिसके चलते इसकी पैदावार में कमी आ जाती है। इसलिए किसानों को फसल की अच्छी उपज हासिल करने के लिए इन बीमारियों को समय से पहचानना बहुत जरूरी है। सरसों की फसल की मुख्य बीमारियों की पहचान कर उनकी रोकथाम के लिए किसान हकृवि द्वारा सिफारिश किए गए फफूंदनाशकों ही प्रयोग करें ताकि बीमारी का सही समय पर उचित प्रबंध हो सके।

उल्लेखनीय है कि सरसों रबी में उगाई जाने वाली फसलों में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। सरसों वर्गीय फसलों के तहत तोरिया, राया, तारामीरा, भूरी व पीली सरसों आती है। हरियाणा में सरसों मुख्य रूप से रेवाड़ी, महेन्द्रगढ़, हिसार, फतेहाबाद, सिरसा, भिवानी व मेवात जिलों में बोई जाती है। किसान सरसों उगाकर कम खर्च में अधिक लाभ कमा रहे हैं। किसान सरसों की बीमारी की समय रहते अच्छी तरह पहचान कर उनका आसानी से रोकथाम कर सकते हैं।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बताया कि अगेती व पछेती सरसों की फसल में कई प्रकार

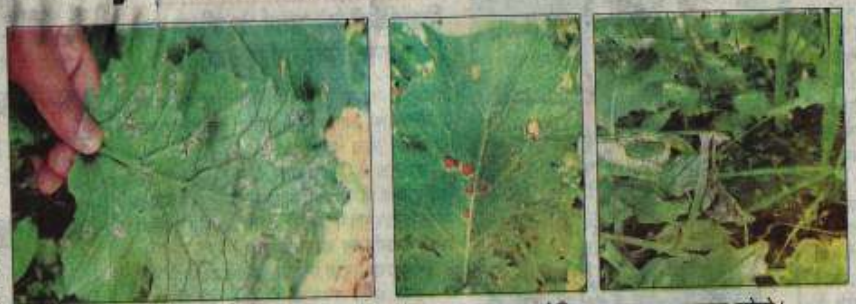

सफेद रतुआ का फाइल फोटो, तनागलन का फाइल फोटो व अल्टरनेरिया ब्लाइट का फाइल फोटो।

पैदावार हासिल कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि किसान फसल की बीमारियों की रोकथाम के लिए किए जाने वाले छिड़काव सदैव सायंकाल को 3 बजे के बाद करें ताकि मधुमक्खियों को कोई नुकसान न हो, जो उपज बढ़ाने में सहायक होती हैं।

ये हैं सरसों की मुख्य बिमारी और उनके लक्षण

अल्टरनेरिया ब्लाइट

कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस.के. पाहुजा ने बताया कि सरसों की फसल की यह मुख्य बीमारी है। कुछ दिन बाद इन धब्बों का रंग काला हो जाता है और पत्ते पर गोल छल्ले दिखाए देने लगते हैं।

फुलिया या डाउनी मिल्ड्यू

इस बीमारी में पत्तियों की निचली सतह पर भूरे रंग के धब्बे बन जाते हैं और धब्बों का ऊपरी भाग पीला पड़ जाता है व इन धब्बों पर चूर्ण सा बन जाता है।

सफेद रतुआ

सरसों की इस बीमारी में पत्तियों पर सफेद और क्रीम रंग के छोटे धब्बे से प्रकट होते हैं।

इससे तने व फूल बेढंग आकार के हो जाते हैं जिसे

तनागलन

तनागलन रोग में तनों पर लम्बे आकार के भूरे जल शक्ति धब्बे बनते हैं जिन पर बाद में सफेद फफूंद की तरह बन जाती है। ये लक्षण पत्तियों व टहनियों पर भी नजर आ सकते हैं तथा फूल आने या फलियां बनने पर इस रोग का अधिक आक्रमण दिखाई देता है जिससे तने टूट जाते हैं और तनों के भीतर काले रंग के पिण्ड बनते हैं।

ऐसे करें बिमारियों की रोकथाम

पादप रोग विभागाध्यक्ष डॉ. एच.एस. सहारण के अनुसार सरसों की अल्टरनेरिया ब्लाइट, फुलिया और सफेद रतुआ बीमारी के लक्षण नजर आते ही 600 ग्राम मैंकोजेब (डाइथेन या इंडोफिल एम 45) को 250 से 300 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ की दर से 15 दिन के अंतर पर 2 बार छिड़काव करें।

इसी प्रकार तना गलन रोग के लिए 2 ग्राम कार्बेन्डाजिम (बाविस्टिन) प्रति किलोग्राम बीज के हिसाब से बीज उपचार करें। जिन क्षेत्रों में तना गलन रोग का प्रकोप हर साल होता है वहां बिजाई के 45 से 50 दिन तथा 65 से 70 दिन के बाद कार्बेन्डाजिम का 0.1 प्रतिशत

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	15-12-22	4	6-8

अच्छे उत्पादन के लिए दिसंबर के तीसरे, चौथे सप्ताह में करें टमाटर, प्याज व मिर्च की बिजाई

सब्जियों की फसलों को पाले से बचाने के लिए देखभाल करना जरूरी

भास्कर न्यूज | हिसार

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के वैज्ञानिकों के अनुसार, दिसंबर माह के तीसरे और चौथे सप्ताह में जहां रबी की प्याज, टमाटर, बैंगन और मिर्च की फसल को इस माह भी उगाया जा सकता है। वहीं, उगाई गई आलू और अन्य सब्जियों फसलों की देखभाल बहुत ही जरूरी है। फसलों को आगामी दिनों में पाले से बचाने के लिए पॉलिथीन का भी प्रयोग किया जा सकता है। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार (एचएयू) के कुलपति प्रोफेसर बीआर काम्बोज ने बताया कि दिसंबर के तीसरे और चौथे सप्ताह में फसलों को अधिक देखभाल की जरूरत होती है। थोड़ी देखभाल कर किसान फसलों को रोगग्रस्त होने से भी बचा सकता है। उन्होंने बताया कि सर्दी में आलू की फसल को रोगों से बचाने के लिए कीटनाशक दवाओं के प्रयोग कर नियंत्रण किया जा सकता है।

फसलों में तैयारी व बचाव के लिए यह करें किसान

प्याजः प्याज को पनीरी इस माह तैयार हो जाएगी। ऐसे में समय से खेत को तैयार करें। रोपाई का सबसे अच्छा समय दिसंबर के अंतिम सप्ताह है।

आलूः खेत की सिंचाई करें तथा हानिकारक कीटों व बीमारियों से रक्षा करें। ध्यान रखें कि आलुओं की खुदाई से कम से कम तीन सप्ताह पूर्व दवाओं का प्रयोग बंद कर दें।

टमाटरः नर्सरी में की गई बिजाई की देखभाल करें। इस माह भी नर्सरी में बिजाई की जा सकती है। बिजाई से पहले 2.5 ग्राम कैप्टान या थाइरम दवा से प्रति किलोग्राम बीज का उपचार करें। कम तापमान होने के कारण अंकुरण तथा पौध को बढ़वार धीमी होगी।

बैंगनः नर्सरी में पौध की देखभाल करें। इस माह भी (यदि बिजाई पहले नहीं की है) बिजाई की जा सकती है। पौधे को पाले से बचाने का प्रबंध करें।

मिर्चः नर्सरी में बिजाई दिसंबर के अंतिम पखवाड़े में की जा सकती है। ठंड होने से बीजों को उगने में अधिक समय लगेगा। नर्सरी में पौध को पाले से बचाना चाहिए।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	15-12-22	2	2-6

बीमारी से बचाने के लिए फसल में शाम को करें दवा का छिड़काव

एचएयू के कुलपति ने सरसों फसल की बीमारियों के प्रति किसानों को सचेत किया

माई सिटी रिपोर्टर

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) प्रशासन ने सरसों की फसलों में लगने वाले रोग को लेकर किसानों को सतर्क किया है। अधिकारियों ने बताया कि रेवाड़ी, महेंद्रगढ़, हिसार, फतेहाबाद, सिरसा, भिवानी व मेवात में सबसे अधिक क्षेत्र में सरसों की बिजाई होती है। तोरिया, राया, तारामीरा, भूरी व पीली सरसों में इस समय बीमारी आ सकती है।

कुलपति प्रो. बीआर कांबोज ने बताया कि किसान फसल की बीमारियों की रोकथाम के लिए किए जाने वाले छिड़काव सदैव शाम 4 बजे से करें ताकि मधुमक्खियों को कोई नुकसान न हो, जो उपज बढ़ाने में सहायक होती हैं। उन्होंने बताया कि अगेती व पछेती सरसों की फसल में कई प्रकार की बीमारियों का प्रकोप हो सकता है, जिनकी किसान समय से पहचान कर रोकथाम कर फसल से अधिक पैदावार हासिल कर सकते हैं।

उन्होंने कहा कि तिलहन विभाग के पादप रोग विशेषज्ञ के अनुसार सरसों की फसल में कई बीमारियों का प्रकोप होने का खतरा रहता है, जिसके कारण इसकी पैदावार में कमी आ जाती है। किसानों को फसल की अच्छी उपज हासिल करने के लिए इन बीमारियों को समय से पहचानना बहुत जरूरी है। सरसों की फसल की मुख्य बीमारियों की पहचान कर उनकी रोकथाम के लिए किसान विश्वविद्यालय द्वारा सिफारिश किए गए फफूंद नाशकों ही प्रयोग करें ताकि बीमारी का सही समय पर उचित प्रबंध हो सके।

ये हैं सरसों की मुख्य बीमारी और उनके लक्षण

सफेद रतुआ। संवाद

अल्टरनेरिया ब्लाइट। संवाद

■ **अल्टरनेरिया ब्लाइट :** कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एसके पाहुजा ने बताया कि सरसों की फसल की यह मुख्य बीमारी है। इस बीमारी में पौधे के पत्तों व फलियों पर गोल व भूरे रंग के धब्बे बनते हैं। कुछ दिन बाद इन धब्बों का रंग काला हो जाता है और पत्ते पर गोल छल्ले दिखाए देने लगते हैं।

■ **फुलिया या डाउनी मिल्ड्यू :** इस बीमारी में पत्तियों की निचली सतह पर भूरे रंग के धब्बे बन जाते हैं और धब्बों का ऊपरी भाग पीला पड़ जाता है व इन धब्बों पर चूर्ण सा बन जाता है।

■ **सफेद रतुआ :** सरसों की इस बीमारी में पत्तियों पर सफेद और क्रीम रंग के छोटे धब्बे से प्रकट होते हैं। इससे तने व फूल बेढंग आकार के हो जाते हैं, जिसे स्टैग हेड कहते हैं। यह बीमारी ज्यादा पछेती फसल में अधिक होती है।

■ **तनागलन :** तनागलन रोग में तनों पर लंबे आकार के भूरे जल शक्ति धब्बे बनते हैं जिन पर बाद में सफेद फफूंद की तरह बन जाती है। ये लक्षण पत्तियों व टहनियों पर भी नजर आ सकते हैं तथा फूल आने या फलियां बनने पर इस रोग का अधिक आक्रमण दिखाई देता है जिससे तने टूट जाते हैं और तनों के भीतर काले रंग के पिंड बनते हैं।

ऐसे करें बीमारियों की रोकथाम

पादप रोग विभागाध्यक्ष डॉ. एचएस सहारण के अनुसार सरसों की अल्टरनेरिया ब्लाइट, फुलिया और सफेद रतुआ बीमारी के लक्षण नजर आते ही 600 ग्राम मैंकोजेब (डाइथेन या इंडोफिल एम 45) को 250 से 300 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ की दर से 15 दिन के अंतर पर 2 बार छिड़काव करें। इसी प्रकार तना गलन रोग के लिए 2 ग्राम कार्बेन्डाजिम (बाविस्टिन) प्रति किलोग्राम बीज के हिसाब से बीज उपचार करें। जिन क्षेत्रों में तना गलन रोग का प्रकोप हर साल होता है वहां बिजाई के 45 से 50 दिन व 65 से 70 दिन के बाद कार्बेन्डाजिम का 0.1 प्रतिशत की दर से दो बार छिड़काव करें।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरि भूमि	15-12-22	10	2-6

सरसों की अधिक पैदावार के लिए बीमारियों की समय से पहचान व रोकथाम जरूरी : प्रो. काम्बोज

- सरसों की बीमारियों की रोकथाम के लिए सिफारिश किए गए फफूंदनाशकों का ही प्रयोग करें

हरिभूमि न्यूज ▸▸ हिसार

सरसों रबी में उगाई जाने वाली फसलों में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। सरसों वर्गीय फसलों के तहत तोरिया, राया, तारामीरा, भूरी व पीली सरसों आती हैं। हरियाणा में सरसों मुख्य रूप से रेवाड़ी, महेन्द्रगढ़, हिसार, फतेहाबाद, सिरसा, भिवानी व मेवात जिलों में बोई जाती है। किसान सरसों उगाकर कम खर्च में अधिक लाभ कमा रहे हैं। किसान सरसों की बीमारी की समय रहते अच्छी तरह पहचान कर उनका आसानी से रोकथाम कर सकते हैं।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बताया कि अगेती व पछेती सरसों की फसल में कई प्रकार की बीमारियों का प्रकोप हो सकता है, जिनकी किसान समय से पहचान कर रोकथाम कर फसल से अधिक पैदावार हासिल कर सकते हैं।

उन्होंने बताया कि किसान फसल की बीमारियों की रोकथाम के लिए किए जाने वाले छिड़काव सदैव सायंकाल को 3 बजे के बाद करें ताकि मधुमक्खियों को कोई नुकसान न हो, जो उपज बढ़ाने में सहायक होती हैं। तिलहन विभाग के पादप रोग विशेषज्ञ के अनुसार सरसों की फसल में कई बीमारियों का प्रकोप होने का खतरा रहता है, जिसके चलते इसकी पैदावार में कमी आ जाती है।

सफेद रतुआ

सरसों की इस बीमारी में पत्तियों पर सफेद और क्रीम रंग के छोटे धब्बे से प्रकट होते हैं। इससे तने व फूल बेढंगा आकार के हो जाते हैं जिसे स्टैग हैड कहते हैं। यह बीमारी ज्यादा पछेती फसल में अधिक होती है।

तनागलन: तनागलन रोग में तनों पर लम्बे आकार के भूरे जल शक्ति धब्बे बनते हैं जिन पर बाद में सफेद फफूंद की तरह बन जाती है। ये लक्षण पत्तियों व टहनियों पर भी नजर आ सकते हैं तथा फूल आने या फलियां बनने पर इस रोग का अधिक आक्रमण दिखाई देता है जिससे तने टूट जाते हैं और तनों के भीतर काले रंग के पिण्ड बनते हैं।

ऐसे करें बीमारियों की रोकथाम

पादप रोग विभागाध्यक्ष डॉ. एच.एस. सहारण के अनुसार सरसों की अल्टरनेरिया ब्लाइट, फुलिया और सफेद रतुआ बीमारी के लक्षण नजर आते ही 600 ग्राम मैंकोजेब (डायथेन या इंडोफिल एम 45) को 250 से 300 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ की दर से 15 दिन के अंतर पर 2 बार छिड़काव करें। इसी प्रकार तना गलन रोग के लिए 2 ग्राम कार्बेन्डाजिम(बाविस्टिन) प्रति किलोग्राम बीज के हिसाब से बीज उपचार करें। जिन क्षेत्रों में तना गलन रोग का प्रकोप हर साल होता है वहां बिजाई के 45 से 50 दिन तथा 65 से 70 दिन के बाद कार्बेन्डाजिम का 0.1 प्रतिशत की दर से दो बार छिड़काव करें।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत समाचार	15-12-22	5	4-6

सरसों की अधिक पैदावार के लिए बीमारियों की समय से पहचान व रोकथाम जरूरी : बी.आर. काम्बोज

हिसार, 14 दिसंबर (विरेंद्र वर्मा): सरसों की बीमारियों की रोकथाम के लिए सिफारिश किए गए फफूंदनाशकों का ही प्रयोग करें सरसों रबी में उगाई जाने वाली फसलों में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। सरसों वर्गीय फसलों के तहत तोरिया, राया, तारामीरा, भूरी व पीली सरसों आती हैं। हरियाणा में सरसों मुख्य रूप से रेवाड़ी, महेन्द्रगढ़, हिसार, फतेहाबाद, सिरसा, भिवानी व मेवात जिलों में बोई जाती है। किसान सरसों उगाकर कम खर्च में अधिक लाभ कमा रहे हैं। विश्वविद्यालय के कुलपति बी.आर. काम्बोज ने बताया कि अगेती व पछेती सरसों की फसल में कई प्रकार की बीमारियों का प्रकोप हो सकता है, जिनकी किसान समय से पहचान कर रोकथाम कर फसल से अधिक पैदावार हासिल कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि किसान फसल की बीमारियों की रोकथाम के लिए किए जाने वाले छिड़काव सदैव सायंकाल को 3 बजे के बाद करें ताकि मधुमक्खियों को कोई नुकसान न हो, जो उपज बढ़ाने में सहायक होती हैं। तिलहन विभाग के पादप रोग विशेषज्ञ के अनुसार सरसों की फसल में कई बीमारियों का प्रकोप होने का खतरा रहता है, जिसके चलते इसकी पैदावार में कमी आ जाती है। सरसों की फसल की मुख्य बीमारियों की पहचान कर उनकी रोकथाम के लिए किसान विश्वविद्यालय द्वारा सिफारिश किए गए फफूंदनाशकों ही प्रयोग करें ताकि बीमारी का सही समय पर उचित प्रबंध हो सके।

ये हैं सरसों की मुख्य बीमारी और उनके लक्षण

अल्टरनेरिया ब्लाइट : कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस.के. पाहुजा ने बताया कि सरसों की फसल की यह मुख्य बीमारी है। इस बीमारी में पौधे के पत्तों व फलियों पर गोल व भूरे रंग के धब्बे बनते हैं। कुछ दिन बाद इन धब्बों का रंग काला हो जाता है और पत्ते पर गोल छल्ले दिखाए देने लगते हैं।

फुलिया या डाउनी मिल्ड्यू : इस बीमारी में पत्तियों की निचली सतह पर भूरे रंग के धब्बे बन जाते हैं और धब्बों का ऊपरी भाग पीला पड़ जाता है व इन धब्बों पर चूर्ण सा बन जाता हैं।

सफेद रतुआ : सरसों की इस बीमारी में पत्तियों पर सफेद और क्रीम रंग के छोटे धब्बे से प्रकट होते हैं। इससे तने व फूल बेढंग आकार के हो जाते हैं जिसे स्टैग हैड कहते हैं। यह बीमारी ज्यादा पछेती फसल में अधिक होती है।

ऐसे करें बीमारियों की रोकथाम : पादप रोग विभागाध्यक्ष डॉ. एच.एस. सहारण के अनुसार सरसों की अल्टरनेरिया ब्लाइट, फुलिया और सफेद रतुआ बीमारी के लक्षण नजर आते ही 600 ग्राम मैंकोजेब (डाइथेन या इंडोफिल एम 45) को 250 से 300 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ की दर से 15 दिन के अंतर पर 2 बार छिड़काव करें। इसी प्रकार तना गलन रोग के लिए 2 ग्राम कार्बेन्डाजिम (बाविस्टिन) प्रति किलोग्राम बीज के हिसाब से बीज उपचार करें। जिन क्षेत्रों में तना गलन रोग का प्रकोप हर साल होता है वहां बिजाई के 45 से 50 दिन तथा 65 से 70 दिन के बाद कार्बेन्डाजिम का 0.1 प्रतिशत की दर से दो बार छिड़काव करें।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक हिसार	15.12.2022	-----	-----

सरसों की अधिक पैदावार के लिए बीमारियों की समय से पहचान व रोकथाम जरूरी : प्रो. बी.आर. काम्बोज

हिसार: सरसों रबी में उगाई जाने वाली फसलों में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। सरसों वर्गीय फसलों के तहत तोरिया, राया, तारामीरा, भूरी व पीली सरसों आती है। हरियाणा में सरसों मुख्य रूप से रेवाड़ी, महेन्द्रगढ़, हिसार, फतेहाबाद, सिरसा, भिवानी व मेवात जिलों में बोई जाती है। किसान सरसों उगाकर कम खर्च में अधिक लाभ कमा रहे हैं। किसान सरसों की बीमारी की समय रहते अच्छी तरह पहचान कर उनका आसानी से रोकथाम कर सकते हैं।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बताया कि अगेती व पछेती सरसों की फसल में कई प्रकार की बीमारियों का प्रकोप हो सकता है, जिनकी किसान समय से पहचान कर रोकथाम कर फसल से अधिक पैदावार हासिल कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि किसान फसल की बीमारियों की रोकथाम के लिए किए जाने वाले छिड़काव सदैव सायंकाल को 3 बजे के बाद करें ताकि मधुमक्खियों को कोई नुकसान न हो, जो उपज बढ़ाने में सहायक होती हैं। तिलहन विभाग के पादप रोग विशेषज्ञ के अनुसार सरसों की फसल में कई बीमारियों का प्रकोप होने का खतरा रहता है, जिसके चलते इसकी पैदावार में कमी आ जाती है। इसलिए किसानों को फसल की अच्छी उपज हासिल करने के लिए इन बीमारियों को समय से पहचानना बहुत जरूरी है। सरसों की फसल की मुख्य बीमारियों की पहचान कर उनकी रोकथाम के लिए किसान विश्वविद्यालय द्वारा सिफारिश किए गए फफूंदनाशकों ही प्रयोग करें ताकि बीमारी का सही समय पर उचित प्रबंध हो सके।

सरसों की बीमारियों की रोकथाम के लिए सिफारिश किए गए फफूंदनाशकों का ही प्रयोग करें

ये हैं सरसों की मुख्य बिमारी और उनके लक्षण

कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस.के. पाहुजा ने बताया कि सरसों की फसल की यह मुख्य बीमारी है। इस बीमारी में पौधे के पत्तों व फलियों पर गोल व भूरे रंग के धब्बे बनते हैं। कुछ दिन बाद इन धब्बों का रंग काला हो जाता है और पत्ते पर गोल छल्ले दिखाए देने लगते हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पांच बजे	14.12.2022	-----	-----

सरसों की बीमारियों की रोकथाम के लिए सिफारिश किए गए फफूंदनाशकों का ही प्रयोग करें

सरसों की अधिक पैदावार के लिए बीमारियों की समय से पहचान व रोकथाम जरूरी : प्रो. काम्बोज

पांच बजे न्यूज

हिसार। सरसों रबी में उगाई जाने वाली फसलों में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। सरसों वर्गीय फसलों के तहत तोरिया, राया, तारामीरा, भूरी व पीली सरसों आती हैं। हरियाणा में सरसों मुख्य रूप से रेवाड़ी, महेन्द्रगढ़, हिसार, फतेहाबाद, सिरसा, भिवानी व मेवात जिलों में बोई जाती है। किसान सरसों उगाकर कम खर्च में अधिक लाभ कमा रहे हैं। किसान सरसों की बीमारी की समय रहते अच्छी तरह पहचान कर उनका आसानी से रोकथाम कर सकते हैं।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बताया कि अगेती व पछेती सरसों की फसल में कई प्रकार की बीमारियों का प्रकोप हो सकता है, जिनको किसान समय से पहचान कर रोकथाम कर फसल से अधिक पैदावार हासिल कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि किसान फसल की बीमारियों की रोकथाम के लिए किए जाने वाले छिड़काव सदैव सायंकाल को 3 बजे के बाद करें ताकि मधुमक्खियों को कोई नुकसान न हो, जो उपज बढ़ाने में सहायक होती हैं। तिलहन विभाग के पादप रोग विशेषज्ञ के अनुसार सरसों की फसल में कई बीमारियों का प्रकोप होने का खतरा रहता है, जिसके चलते इसकी पैदावार में कमी आ जाती है। इसलिए किसानों को फसल की अच्छी उपज हासिल करने के लिए इन बीमारियों को समय से पहचानना बहुत जरूरी है। सरसों की फसल की मुख्य बीमारियों की पहचान कर उनकी रोकथाम के लिए किसान विश्वविद्यालय द्वारा सिफारिश किए गए फफूंदनाशकों का ही प्रयोग करें ताकि बीमारी का सही समय पर उचित प्रबंध हो सके।

ये हैं सरसों की मुख्य बीमारी और उनके लक्षण

अल्टरनेरिया ब्लाइट

कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस.के. पाहुजा ने बताया कि सरसों की फसल की यह मुख्य बीमारी है। इस बीमारी में पौधे के पत्तों व फलियों पर गोल व भूरे रंग के धब्बे बनते हैं। कुछ दिन बाद इन धब्बों का रंग काला हो जाता है और पत्तों पर गोल छल्ले दिखाई देने लगते हैं।

फुलिया या डाउनी मिल्ड्यू

इस बीमारी में पत्तियों की निचली सतह पर भूरे रंग के धब्बे बन जाते हैं और धब्बों का ऊपरी भाग पीला पड़ जाता है व इन धब्बों पर चूर्ण सा बन जाता है।

सफेद रतुआ

सरसों की इस बीमारी में पत्तियों पर सफेद और क्रीम रंग के छोटे धब्बे से प्रकट होते हैं। इससे तने व फूल बेढंग आकार के हो जाते हैं जिसे स्टैग हैड कहते हैं। यह बीमारी ज्यादा पछेती फसल में अधिक होती है।

तनागलन

तनागलन रोग में तनों पर लम्बे आकार के भूरे जल शोषित धब्बे बनते हैं जिन पर बाद में सफेद फफूंद की तह बन जाती है। ये लक्षण पत्तियों व टहनियों पर भी नजर आ सकते हैं तथा फूल आने या फलियां बनने पर इस रोग का अधिक आक्रमण दिखाई देता है जिससे तने टूट जाते हैं और तनों के भीतर काले रंग के पिण्ड बनते हैं।

ऐसे करें बीमारियों की रोकथाम

पादप रोग विभागाध्यक्ष डॉ. एच.एस. सहारण के अनुसार सरसों की अल्टरनेरिया ब्लाइट, फुलिया और सफेद रतुआ बीमारी के लक्षण नजर आते ही 600 ग्राम मैंकोजेब (डाइथेन या इंडोफिल एम 45) को 250 से 300 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ की दर से 15 दिन के अंतर पर 2 बार छिड़काव करें। इसी प्रकार तना गलन रोग के लिए 2 ग्राम कार्बेन्डाजिम (बाविस्टिन) प्रति किलोग्राम बीज के हिसाब से बीज उपचार करें। जिन क्षेत्रों में तना गलन रोग का प्रकोप हर साल होता है वहां बिजाई के 45 से 50 दिन तथा 65 से 70 दिन के बाद कार्बेन्डाजिम का 0.1 प्रतिशत की दर से दो बार छिड़काव करें।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समस्त हरियाणा	14.12.2022	-----	-----

सरसों की बीमारियों की रोकथाम के लिए सिफारिश किए गए फफूंदनाशकों का ही प्रयोग करें

समस्त हरियाणा ब्यूज

हिसार। सरसों रबी में उगाई जाने वाली फसलों में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। सरसों वर्गीय फसलों के तहत तोरिया, रया, तारामीरा, भूरी व पीली सरसों आती हैं। हरियाणा में सरसों मुख्य रूप से रेवाड़ी, महेन्द्रगढ़, हिसार, फतेहाबाद, सिरसा, भिवानी व मेवात जिलों में बोई जाती है। किसान सरसों उगाकर कम खर्च में अधिक लाभ कमा रहे हैं। किसान सरसों की बीमारी की समय रहते अच्छी तरह पहचान कर उनका आसानी से रोकथाम कर सकते हैं। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बताया कि अगेती व पछेती सरसों की फसल में कई प्रकार की बीमारियों का प्रकोप हो सकता है, जिनकी किसान समय से पहचान कर रोकथाम कर फसल से अधिक पैदावार हासिल कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि किसान फसल की बीमारियों की रोकथाम के लिए किए जाने वाले छिड़काव सदैव सायंकाल को 3 बजे के बाद करें ताकि मधुमक्खियों को कोई नुकसान न हो, जो उपज बढ़ाने में सहायक होती हैं। शिक्षण विभाग के पादप रोग विशेषज्ञ के अनुसार सरसों की फसल में कई बीमारियों का प्रकोप होने का खतरा रहता है, जिसके चलते इसकी पैदावार में कमी आ जाती है। इसलिए, किसानों को फसल की अच्छी उपज हासिल करने के लिए इन बीमारियों को समय से पहचानना बहुत जरूरी है। **ये हैं सरसों की मुख्य बिमारी और उनके लक्षण : अल्टरनेरिया ब्लाइट :** कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस.के. पाहुजा ने बताया कि सरसों की फसल की यह मुख्य बीमारी है। इस बीमारी में पौधे के पत्तों व फलियों पर गोल व भूरे रंग के धब्बे बनते हैं। कुछ दिन बाद इन धब्बों का रंग काला हो जाता है और पत्ते पर गोल छल्ले दिखाई देने लगते हैं। **फुलिया या डाउनी मिल्ड्यू :** इस बीमारी में पत्तियों की निचली सतह पर भूरे रंग के धब्बे बन जाते हैं और धब्बों का ऊपरी भाग पीला पड़ जाता है व इन धब्बों पर चूर्ण सा बन जाता है। **सफेद रतुआ :** सरसों की इस बीमारी में पत्तियों पर सफेद और क्रीम रंग के छोटे धब्बे से प्रकट होते हैं। इससे तने व फूल बेढंग आकार के हो जाते हैं जिसे स्टैग हैड कहते हैं। **तनागलन:** तनागलन रोग में तनों पर लम्बे आकार के भूरे जल शक्ति धब्बे बनते हैं जिन पर बाद में सफेद फफूंद की तरह बन जाती है। ये लक्षण पत्तियों व टहनियों पर भी नजर आ सकते हैं। तनों के भीतर काले रंग के पिण्ड बनते हैं। **ऐसे करें बिमारियों की रोकथाम :** पादप रोग विभागाध्यक्ष डॉ. एच.एस. सहारण के अनुसार सरसों की अल्टरनेरिया ब्लाइट, फुलिया और सफेद रतुआ बीमारी के लक्षण नजर आते ही 600 ग्राम मैंकोजेब (डाइथेन या इंडोफिल एम 45) को 250 से 300 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ की दर से 15 दिन के अंतर पर 2 बार छिड़काव करें। इसी प्रकार तना गलन रोग के लिए 2 ग्राम कार्बेन्डाजिम(बाविस्टिन) प्रति किलोग्राम बीज के हिसाब से बीज उपचार करें। जिन क्षेत्रों में तना गलन रोग का प्रकोप हर साल होता है वहां बिजाई के 45 से 50 दिन तथा 65 से 70 दिन के बाद कार्बेन्डाजिम का 0.1 प्रतिशत की दर से दो बार छिड़काव करें।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पाठक पक्ष	14.12.2022	-----	-----

सरसों की अधिक पैदावार के लिए बीमारियों की समय से पहचान व रोकथाम जरूरी : प्रो. बी.आर. काम्बोज

सरसों की बीमारियों की रोकथाम के लिए सिफारिश किए गए फफूंदनाशकों का ही प्रयोग करें

पाठकपक्ष न्यूज

हिसार, 14 दिसम्बर : सरसों रबी में उगाई जाने वाली फसलों में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। सरसों वर्गीय फसलों के तहत तोरिया, राया, तारामीरा, भूरी व पीली सरसों आती हैं। हरियाणा में सरसों मुख्य रूप से रेवाड़ी, महेन्द्रगढ़, हिसार, फतेहाबाद, सिरसा, भिवानी व मेवात जिलों में बोई जाती है। किसान सरसों उगाकर कम खर्च में अधिक लाभ कमा रहे हैं। किसान सरसों की बीमारी की समय रहते अच्छी तरह पहचान कर उनका आसानी से रोकथाम कर सकते हैं।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बताया कि अगेती व पछेती सरसों की फसल में कई प्रकार की बीमारियों का प्रकोप हो सकता है, जिनकी किसान समय से पहचान कर रोकथाम कर फसल से अधिक पैदावार हासिल कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि किसान फसल की बीमारियों की रोकथाम के लिए किए जाने वाले छिड़काव सदैव सायंकाल को 3 बजे के बाद

करें ताकि मधुमक्खियों को कोई नुकसान न हो, जो उपज बढ़ाने में सहायक होती हैं। तिलहन विभाग के पादप रोग विशेषज्ञ के अनुसार सरसों की फसल में कई बीमारियों का प्रकोप होने का खतरा रहता है, जिसके चलते इसकी पैदावार में कमी आ जाती है। इसलिए किसानों को फसल की अच्छी उपज हासिल करने के लिए इन बीमारियों को समय से पहचानना बहुत जरूरी है। सरसों की फसल की मुख्य बीमारियों की पहचान कर उनकी रोकथाम के लिए किसान विश्वविद्यालय द्वारा सिफारिश किए गए फफूंदनाशकों ही प्रयोग करें ताकि बीमारी का सही समय पर उचित प्रबंध हो सके।

ये हैं सरसों की मुख्य बिमारी और उनके लक्षण

अल्टरनेरिया ब्लाइट

कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस.के. पाहुजा ने बताया कि सरसों की फसल की यह मुख्य बीमारी है। इस बीमारी में पौधे के पत्तों व फलियों पर गोल व भूरे रंग के धब्बे बनते हैं। कुछ दिन बाद इन धब्बों का रंग काला हो जाता है और पत्ते पर गोल छल्ले दिखाए देने लगते हैं।

फुलिया या डाउनी मिल्ड्यू

इस बीमारी में पत्तियों की निचली सतह पर भूरे रंग के धब्बे बन जाते हैं और धब्बों का ऊपरी भाग पीला पड़ जाता है व इन धब्बों पर चूर्ण सा बन जाता हैं।

सफेद रतुआ

सरसों की इस बीमारी में पत्तियों पर सफेद और क्रीम रंग के छोटे धब्बे से प्रकट होते हैं। इससे तने व फूल बेढंग आकार के हो जाते हैं जिसे स्टैग हैड कहते हैं। यह बीमारी ज्यादा पछेती फसल में अधिक होती है।

तनागलन

तनागलन रोग में तनों पर लम्बे आकार के भूरे जल शक्ति धब्बे बनते हैं जिन पर बाद में सफेद फफूंद की तरह बन जाती है। ये लक्षण पत्तियों व टहनियों पर भी नजर आ सकते हैं तथा फूल आने या फलियां बनने पर इस रोग का अधिक आक्रमण दिखाई देता है जिससे तने टूट जाते हैं और तनों के भीतर काले रंग के पिण्ड बनते हैं।

ऐसे करें बिमारियों की रोकथाम

पादप रोग विभागाध्यक्ष डॉ. एच.एस. सहारण के अनुसार सरसों की अल्टरनेरिया ब्लाइट, फुलिया और सफेद रतुआ बीमारी के लक्षण नजर आते ही 600 ग्राम मैंकोजेब (डाइथेन या इंडोफिल एम 45) को 250 से 300 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ की दर से 15 दिन के अंतर पर 2 बार छिड़काव करें। इसी प्रकार तना गलन रोग के लिए 2 ग्राम कार्बेन्डाजिम(बाविस्टिन) प्रति किलोग्राम बीज के हिसाब से बीज उपचार करें। जिन क्षेत्रों में तना गलन रोग का प्रकोप हर साल होता है वहां बिजाई के 45 से 50 दिन तथा 65 से 70 दिन के बाद कार्बेन्डाजिम का 0.1 प्रतिशत की दर से दो बार छिड़काव करें।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
नभ-छोर	14.12.2022	-----	-----

किसान सरसों की बीमारी की समय रहते रोकथाम कर सकते हैं : कुलपति

नभ-छोर न्यूज ⏭ 14 दिसंबर

हिसार। सरसों रबी में उगाई जाने वाली फसलों में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। सरसों वर्गीय फसलों के तहत तोरिया, राया, तारामीरा, भूरी व पीली सरसों आती हैं। प्रदेश में सरसों मुख्य रूप से रेवाड़ी, महेन्द्रगढ़, हिसार, फतेहाबाद, सिरसा, भिवानी व मेवात जिलों में बोई जाती है। किसान सरसों उगाकर कम खर्च में अधिक लाभ कमा रहे हैं। किसान सरसों की बीमारी की समय रहते अच्छी तरह पहचान कर उनका आसानी से रोकथाम कर सकते हैं। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने बताया कि अगेती व पछेती सरसों की फसल में कई प्रकार की बीमारियों का प्रकोप हो सकता है, जिनकी किसान समय से पहचान कर रोकथाम कर फसल से अधिक पैदावार हासिल कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि किसान फसल की बीमारियों की रोकथाम के लिए किए जाने वाले छिड़काव सदैव सायंकाल को 3 बजे के बाद करें ताकि मधुमक्खियों को कोई नुकसान न हो, जो उपज बढ़ाने में सहायक होती हैं। तिलहन विभाग के पादप रोग विशेषज्ञ के अनुसार सरसों की फसल में कई बीमारियों का प्रकोप होने का खतरा रहता है, जिसके चलते इसकी पैदावार में कमी आ जाती है। इसलिए किसानों को फसल की अच्छी उपज हासिल करने के लिए इन बीमारियों को समय से पहचानना बहुत जरूरी है। सरसों की फसल की मुख्य बीमारियों की पहचान कर उनकी रोकथाम के लिए किसान विश्वविद्यालय द्वारा सिफारिश किए गए फफूंदनाशकों ही प्रयोग करें ताकि बीमारी का सही समय पर उचित प्रबंध हो सके।

ऐसे करें बीमारियों की रोकथाम

पादप रोग विभागाध्यक्ष डॉ. एचएस सहारण के अनुसार सरसों की अल्टरनेरिया ब्लाइट, फुलिया और सफेद रतुआ बीमारी के लक्षण नजर आते ही 600 ग्राम मैंकोजेब (डाइथेन या इंडोफिल एम 45) को 250 से 300 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ की दर से 15 दिन के अंतर पर 2 बार छिड़काव करें। इसी प्रकार तना गलन रोग के लिए 2 ग्राम कार्बेन्डाजिम(बाविस्टिन) प्रति किलोग्राम बीज के हिसाब से बीज उपचार करें। जिन क्षेत्रों में तना गलन रोग का प्रकोप हर साल होता है वहां बिजाई के 45 से 50 दिन तथा 65 से 70 दिन के बाद कार्बेन्डाजिम का 0.1 प्रतिशत की दर से दो बार छिड़काव करें।

ये हैं सरसों की मुख्य बिमारी और उनके लक्षण

अल्टरनेरिया ब्लाइट : कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एसके पाहुजा ने बताया कि सरसों की फसल की यह मुख्य बीमारी है। इस बीमारी में पौधे के पत्तों व फलियों पर गोल व भूरे रंग के धब्बे बनते हैं। कुछ दिन बाद इन धब्बों का रंग काला हो जाता है और पत्ते पर गोल छल्ले दिखाए देने लगते हैं।

फुलिया या डाउनी मिल्ड्यू : इस बीमारी में पत्तियों की निचली सतह पर भूरे रंग के धब्बे बन जाते हैं और धब्बों का ऊपरी भाग पीला पड़ जाता है व इन धब्बों पर चूर्ण सा बन जाता है।

सफेद रतुआ : सरसों की इस बीमारी में पत्तियों पर सफेद और क्रीम रंग के छोटे धब्बे से प्रकट होते हैं। इससे तने व फूल बेढंग आकार के हो जाते हैं जिसे स्टैग हैड कहते हैं। यह बीमारी ज्यादा पछेती फसल में अधिक होती है।

तनागलन : तनागलन रोग में तनों पर लम्बे आकार के भूरे जल शक्ति धब्बे बनते हैं जिन पर बाद में सफेद फफूंद की तरह बन जाती है। ये लक्षण पत्तियों व टहनियों पर भी नजर आ सकते हैं तथा फूल आने या फलियां बनने पर इस रोग का अधिक आक्रमण दिखाई देता है जिससे तने टूट जाते हैं और तनों के भीतर काले रंग के पिण्ड बनते हैं।